इनकेशाफ़

★ गमें हुसैन में रोना कैसा ?

★ अहलेबैत को अलैहिस्सलाम कहना कैसा ?

★ मौला अली की काबा में पैदाईश होने की दलील

मोअल्लिफ

पीर ज़ादा हज़रत अल्लामा व मौलाना मुफ़्ती

सैय्यद शजर अली

वक़ारी मदारी

फ़ाज़िले साऊथ अफ़्रीका, दारूनूर मकनपुर शरीफ़,

ज़िला कानपुर नगर (यू.पी.) मो. 7860105441

इनकेशाफ़

मोअल्लिफ

पीर ज़ादा हज़रत अल्लामा व मौलाना मुफ़्ती

सैय्यद शजर अली
वक़ारी मदारी

फ़ाज़िले साऊथ अफ़्रीका, दारून्नूर मकनपुर शरीफ़,
ज़िला कानपुर नगर (यू.पी.)
मो. 7860105441

नाम किताब - इनकेशाफ़

मोअल्लिफ़ - मुफ़्ती सैय्यद शजर अली

सफ़हात - 28

तादाद - 1000

प्रिंटिंग - अल मदार ऑफ़सेट कानपुर

सन् इशाअत - जनवरी 2020

नाशिर - जामिया महज़र-उल-उलूम वक़ारिया मदारियह

हदिया - 30/-

किताब मिलने का पता

ख़ानवादऐ वक़ारिया मदारिया

मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर

-: नोट :-

जिस कदर इख़्तिलाफ़ात इस वक़्त अहले सुन्नत में हैं वह सारे के सारे इल्मी इख़्तिलाफ़ात हैं और पढ़े लिखे उलमाए अहले सुन्नत अपनी तबाहुरे इल्मी और दलाएल के ज़रिये करते हैं और यह उनका इल्मी हक़ है, अहले सुन्नत में इल्मी इख़्तिलाफ़ का तरीका भी यही रहा है कि उलमा मज़बूत दलाएल से बात कर के एक दूसरे की ग़लत फ़हमियां मिटाया करते थे, मिसाल के तौर पर इमामे आज़म अबु हनीफ़ा रज़ि० से उन्हीं के शागिर्द इमामैन ने यानी इमाम मोहम्मद और इमाम यूसुफ़ ने इल्मी इख़्तिलाफ़ात किये मगर इमामे आज़म को न उन्होंने भला बुरा कहा और ना ही इमामे आज़म ने उन पर शिद्दत इख़्तियार की। उन बुजुर्गों से यह मालूम होता है कि इल्मी इख़्तिलाफ़ात को शख़्सी इख़्तिलाफ़ बनाना और एक दूसरे की ज़ात को भला बुरा कहना कहीं से जाएज़ नहीं।

عن ابن مسعود . رضی اللہ عنہ. قال: قال رسول اللہ . صلی اللہ علیہ وسلم :((سباب المومن فسوق، وقتالہ کُفر)): متفق علیہ.

हज़रते इब्ने मसऊद रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन की तौहीन फ़िस्क़ है और उसका क़त्ल कुफ़्र।

दूसरी ररवायत में है - एक मुस्लिम दूसरे मुस्लिम का المسلم اخ المسلم भाई है।

हम फ़रूई इख़्तेलाफ़ से बच कर मोहब्बत के साथ रहें यही मेरा पैग़ाम है।

सैय्यद शजर अली

इन्तिसाब

इमामे आज़म अबु हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक और इमाम हम्बल रिज़वानउल्लाह अलैहिम अजमईन के नाम जिन्होंने बे ख़ौफ हो कर ख़ारजियत के दौर में भी ज़िक्रे अहले बैत को कम न होने दिया।

तमाम तारीफ़ उस रब्बे कायनात के लिये जिसने इस कायनात की तख़्लीक़ की और अफज़लुल अंम्बिया पर सलातो सलाम जिस नूर से दो टुकड़े हसन हुसैन हुए और उनसे इतने चराग़ रौशन हुए जितने आसमान के तारे - ये छोटा सा रिसाला जो आपके हाथ में है वो मोहब्बते अहले बैत से ताल्लुक रखने वाले उन अफ़आल से आपको मोतरिफ़ कराऐगा जिनका किसी मुसलमान के अन्दर होना उसके मोमिन होने की अलामत होती है ये तो सारी दुनिया जानती है के मोहब्बते अहले बैत फ़र्ज़ है जैसा कि क़ुर्आन में रब ने फ़रमाया -

قُل لا اَسئلكم عليه اجراً اِلاّ المودة فى القُربىٰ

ऐ मेरे प्यारे महबूब फ़रमा दीजिये के मैं (रब्बे कायनात) नबुव्वतो रिसालत के काम के बदले में उम्मत से कुछ नहीं चाहता मगर अहले बैत की मोअद्दत, मोहब्बत और मोअद्दत में फ़र्क ये है कि मोहब्बत मुतनाही हो सकती है मगर मोअद्दत ख़त्म नहीं हो सकती, एक बाप पर ज़रूरी है कि वो अपने बेटे को वदिय्यत करके जाए कि मैं सय्यदों से मोहब्बत करता हूँ तुम भी अपनी औलाद को यही वदिय्यत करना ताकि नस्लों तक ये मोहब्बत क़ायम दायम रहे और क़यामत के दिन ये मोअद्दत नस्लों की बख़्शिश का सरमाया बने, मेरी नज़र में मोअद्दत का यही अन्दाज़ होना चाहिये।

यहाँ ये वाज़ेह कर देना बहुत ज़रूरी है कि ये मोअद्दत पंजतन पाक या 12 इमाम से ही नहीं बल्की क़यामत तक आने वाली उनकी नस्लों से उम्मत की नस्लों में होनी चाहिये जैसा कि रसूले पाक की हदीस है जो इमाम अहमद और अबू यअला ने नक़्ल की عن ابى سعيد الخدرى۔ انّهُما لايفترقا حتىٰ يرُدّا اِلىٰ الحوض

कि कुर्आन और अहले बैत साथ साथ रहेंगे और कभी जुदा न होंगे हर ज़माने में रहेंगे यहाँ तक के हौज़े कौसर पर मेरे पास वापस किये जाएंगे यानी अहले बैत और कुर्आन की इब्तेदा भी रसूल हैं और निज़ामे क़ायनात के इख़्तेताम के बाद इन्तेहा भी रसूले पाक हैं। जिस तरह हर एक कुर्आन का एहतराम फ़र्ज़ है इसी तरह हर एक सहीयुन्नसब आले रसूल का एहतराम भी फ़र्ज़ है, इमामे शाफ़ई फ़रामते हैं

يا آلِ بيت رسول اللّٰه حُبكم۔ فرضٌ مِن القُرآن انزله
يكفيكم مِن عظيم الفخرِانكُم۔ مَن لم يصل عليكم لا صلوٰة لهٗ

ऐ आले रसूल आपकी मोहब्बत कुर्आन की रौ से फ़र्ज़ है जो नाज़िल किया गया आपके फ़ख़्रे अज़ीम के लिये यह काफ़ी है कि जो आप पर दुरूद न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होती।

हम अहले सुन्नत हमेशा से सहाबा के साथ साथ अहले बैत से मोहब्बत रखते हैं और क़यामत तक रखते रहेंगे हमारे लिये ये भी ज़रूरी है कि हम सहाबा की गुस्ताख़ी से भी बाज़ रह कर अपनी आख़िरत की हिफ़ाज़त करें और अहले बैत के ख़िलाफ़ भी किसी तरह की फ़िक्र ज़ेहन में दाख़िल न होने दें अगर कोई चार खुल्फ़ा में से किसी का गुस्ताख़ हो जाता है तो वो राफ़ज़ी होता है ओर अगर क़यामत तक आने वाले किसी भी आले रसूल का गुस्ताख़ होता है तो वो ख़ारजी कहलाता है। यहाँ मैं कुछ बाते आपके सामने पेश करना चाहता हूँ जिन बातों का ज़हन में पैदा होना मुसलमान को ख़ारजियत की खाई में ढकेल कर उसका ईमान और अक़ीदा बरबाद करने लगता है और धीरे धीरे वह मुकम्मल तौर पर आले रसूल का बाग़ी हो कर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचाने वाला

बन जाता है अगर कोई अहले बैत में से किसी की वाज़ेह फ़ज़ीलत को घटाने की कोशिश करे मिसाल के तौर पर ये कहे के अली सय्यद नहीं - अली काबे में नहीं पैदा हुए - अपने मशाएख़ को रज़ि० कहे जो के अलफ़ाज़ सहाबा के लिये कुर्आन में ख़ास हैं और अगर अहले बैत के लिये कोई अलैहिस सलाम कह दे तो उस पर शिद्दत इख़्तियार करें। इसके अलावा जिन मुबाह रूसूमात से नामे अहले बैत की इशाअत होती है उन रूसूमात को शिर्क बिदअत कहके रोकने की कोशिश करना ग़में हुसैन में रोने से रोकना इन सब में कहीं न कहीं मोहब्बते अहले बैत की कमी नज़र आती है और ख़ारजियत की शुरूआत भी मुसलमान के क़ल्बो ज़ेहन में इन एतराज़ात के पैदा होने पर होती है, इसके अलावा अगर अहले बैत से नसबी ताल्लुक रखने वाले किसी भी सिलसिले से दिल में आपके सवाल पैदा होने लगे या किसी भी मुस्तनद आले रसूल की ख़ानक़ाह के सादात के बारे में ये ख़याल आने लगे के वो ख़ानक़ाह वाले सैय्यद नहीं तो होशियार हो जाईयेगा ये ख़ारजियत की शुरूआत में से हो सकती है।

अहले बैत को अलैहिस सलाम कहना कुर्आन हदीस की रौशनी में

चूँकि रिसाला मुख़्तसर है इस लिये उन तमाम बातों पर गुफ़्तुगू करना मुम्किन नहीं जिनका ज़िक्र हुआ मगर कुछ ख़ास ख़ास बातों पर गुफ़्तुगू करना ज़रूरी है ताकि हम अहले सुन्नत का ज़ेहन ख़ारजियत से महफ़ूज़ रहे -

वैसे तो अलैहिस सलाम के लुग्वी माना होते हैं कि उस पर सलामती, रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया

افشو السّلامَ بينكم

आपस में एक दूसरे में सलाम को आम करो अब हम अगर किसी को अस्सलामो अलैकुम कह रहें है इसका मतलब है हमने उसे अलैहिस सलाम ही कहा है और उसके जवाब में वअलैकुमस सलाम कहने वाला भी सलाम करने वाले को अलैहिस सलाम कह रहा है ऐसे ही अक्सर शादी के कार्ड में दुल्हे को सल्लमहू लिखना भी उसे मानवी ऐतबार से अलैहिस सलाम कहना ही है मगर हमारे अइम्मए अहले सुन्नत ने मुहद्देसीन व मुजद्देदीन ने लफ्ज़े अलैहिस सलाम अंम्बिया के नामों के साथ लिखा तो तख़्सीस के साथ अंम्बिया के नामों के साथ अलैहिस सलाम कहना हम सुन्नियों का शेवा हो गया। रहा सवाल अइम्मए अहले बैत के साथ अलैहिस सलाम कहने का तो इमाम बुख़ारी से लेकर अक्सर अइम्मए अहले सुन्नत ने उन्हें भी अलैहिस सलाम लिखा और कुछ अइम्मए अहले सुन्नत ने रज़ी अल्लाह अन्हों भी लिखा लेकिन अहले बैत को अलैहिस सलाम न कहा जाए इस पर किसी ने शिद्दत इख़्तेयार नहीं की और न ही अइम्मए अहले बैत को अलैहिस सलाम कहने से किसी सुन्नी इमाम ने रोका - इमाम बुख़ारी सही बुख़ारी की दूसरी जिल्द के सफ़ा 298 पर लिखते है

قال علی علیه السّلام

हज़रत अली अलैहिस सलाम ने फ़रमाया - सफ़ा 914 बाब मनाक़िबे क़िराबते रसूल अल्लाह में लिखते हैं

ومنقبت فاطمة علیه السّلام

सफ़ा 861 किताब फ़रज़ुल ख़ुमुस के बाब में लिखते हैं

انّ حُسین بِن علی علیه السّلام

(हुसैन बिन अली अलैहिस सलाम)

मसाएले सुलह के बयान के सफ़ा 177 पर लिखते हैं।

وقال لِفاطمة علیه السّلام

(और हज़रत अली ने फ़ातेमा अलैहिस सलाम से कहा)
तीसरी जिल्द के सफ़ा 162 पर लिखते है।

باب بعث علی بن ابی طالب علیه السلام وخالدبن ولید الی الیمن

रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अली अलैहिस सलाम को और ख़ालिद बिन वलीद को यमन भेजा सही बुख़ारी शरीफ़, किताबुल मग़ाज़ी सफ़ा न० 655 पर अली बिन अबी तालिब अलैहिस सलाम लिखा

तबक़ात कबीर में इमामे अहले सुन्नत इमाम ज़हरी ने सफ़ा न० 65 और 96 पर अली अलैहिस सलाम लिखा।

फ़ज़ायले क़ुर्आन के बाब में इमाम बुख़ारी ने सफ़ा न० 994 पर हुसैन अलैहिस सलाम लिखा।

इमाम अहमद बिन हम्बल ने फ़ज़ायले सहाबा के पेज न० 695 में अली अलैहिस सलाम लिखा।

सफ़ा 218 किताबुल जेहाद वस्सेयर के बाब लिबसिल बैज़ा में फ़ातिमा अलैहिस सलाम लिखा।

आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी ने एआलिल अफ़ादा फ़ी ताज़ियतिल हिन्द व बयानिश्शहादा के सफ़ा न० 3 पर हुसैन अलैहिस सलाम लिखा।

इस्बातुल वसिय्यत में इमाम अबुल हसन अली बिन हुसैन बिन अली सऊदी हज़ली साहिबे मुरूजज़्ज़हब जिनका विसाल 346 हि० में हुआ उन्होंने भी अइम्मए अहले बैत और सैय्यदा फ़ातिमा को अलैहस सलाम लिखा।

जब तमाम अइम्मए अहले सुन्नत अहले बैत को अलैहिस सलाम लिख रहे हैं तो हमें इसे रोकने के लिये शिद्दत अख़्तियार करना ख़ारजियत की अलामत हो सकती है जिस्से बच कर हम अपने ईमानों अक़ीदो की हिफ़ाज़त कर सकते हैं।

अली आए है काबे में

अवामे अहले सुन्नत में फ़ुरूई मसाएल को लेकर शिद्दत करना एक बा शऊर शख़्स का शेवा नहीं हो सकता क्यूंके इनमें उलझ जाने से अवाम उसूल के उलूम से ना वाक़िफ़ रह जाती है और अहले सुन्नत का नुक्सान होता है, फ़िर भी अवाम की समझ के लिये ये मसला वाज़ेह कर देना भी ज़रूरी है के मौला अली मुश्किल कुशा की विलादत ख़ाने काबा के अन्दर हुई थी।

इमामे अहले सुन्नत इमाम हाकिम नेसा पुरी रह० मुस्दरक अला सहीहेन की किताब मारफ़तुस्सहाबा - तीसरी जिल्द सफ़ा 593

تـواتـرت الاخبـار ان فاطـمه بنت اسد ولدت اَمیر المو منین علی بن ابی طالب کرم الله وجه الکریم فی جوف َالکعبة

इमाम हाकिम फरमाते हैं के मुतवातिर रिवायात से साबित है के फ़ातिमा बिन्ते असद ने अली को ऐैने काबा में जन्म दिया।

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत हज़रत शेख़ अब्दुलहक मोहद्दिस देहलवी रह० की किताब "मदारेजुन्नबुव्वत" का तरजुमा मुफ़्ती सैय्यद गुलाम मोईन उद्दीन नईमी ने किया इसके सफ़ा न० 612 पर लिखा है हज़रत अली की विलादत जौफ़े काबा में हुई।

अल्लामा शेख़ इमाम मोमिन शब्लन्जी नूरूल अबसार फ़ी मनाक़िबे आले बैतिल मुख़्तार की फ़स्ल ज़िक्रे मनाक़िबे

सैय्यदना अली इबने अबी तालिब में लिखते हैं-

ابن عم الرسول وسیف اللّٰه المسلول وُلد رضی الله عنه بمکة داخل البیت الحرام

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई अल्लाह के तलवार मौला अली कर्रम अल्लाह वजहुल करीम ख़ाने काबा के अन्दर मक्के में पैदा हुए।

आशिके रसूले कौनैन हुज़ूर सैय्यदना अल्लामा नूरूद्दीन अब्दुर्रहमान जामी रह० ने किताब शवाहेदुन्नबुव्वत मुतरज्जिम बशीर हुसैन नाज़िम एम. ए. मकतबा नबविया गंज बख़्श लाहौर से छपी इसके पेज 280 पर लिखा है के मौला अली की विलादत काबे में हुई है।

अल्लामा अबुल हसन अली बिन हुसैन बिन अली सऊदी हज़ली जिनका विसाल 342 हि० है आप अपनी किताब इस्बातुल वसीयतुल इमाम अली बिन अबी तालिब में लिखते हैं-

فـاطـمـة بـنـت اسـد لـما حملت با میر المومنـین کانت تطوف بـالبيت فـجـاء هـا الـمـخاض وهيِ فيِ الطواف، فلما اشتد بها دخـلـت الـكـعبة فـولدته فيِجوف البيت على مثال ولادة آمنة النبی (ص) ما ولد فی الکعبة قبله ولا بعد غیره.

हज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद के शिकम में अमीरूल मोमिनीन थे और वो ख़ानए काबा का तवाफ़ कर रहीं थी दौराने तवाफ़ उन्हे दर्दे ज़ेह हुआ तो वो काबे में दाख़िल हुई फ़िर मौला अली की विलादत काबे के अन्दर हुई मौला अली से न पहले कोई काबे में पैदा हुआ न बाद में।

बेशुमार दलायल से मौलाये कायेनात का काबे में पैदा होना साबित है मगर ख़ारजी ज़ेहन के मालेकीन सिर्फ़ आले

रसूल के तअस्सुब में उनके मक़ामों मरतबे को घटाते हैं और अपने से ही अपनी आख़िरत तबाह करते नज़र आते हैं।

शाह वली उल्लाह मोहद्दिस देहलवी रह० की किताब इज़ालतुल ख़ेफ़ा अन ख़ेलाफ़तिल खुल्फ़ा का तरजुमा डॉक्टर महमूदुल हसन ने किया, इस किताब के पेज 29 पर उन्होंने लिखा के मौला अली ख़ाने काबा में पैदा हुए मुल्ला अली क़ारी रह० की मशहूरे ज़माना शरहे शिफ़ाए क़ाज़ी अयाज़ के सफ़ा 368 पर भी यही मिलेगा के मौला अली काबे में पैदा हुए। मोहद्दिस इब्ने सबाग़ ने भी यही लिखा है के मौला अली काबे में पैदा हुए हैं।

मनक़बत

खुशी में झूमे है काबा अली आए हैं काबे में
हर एक सू शोर है बरपा अली आए हैं काबे में
नचाएंगे जिस उंगली से वो उंगली याद आई है
हिला ख़ैबर का दरवाज़ा अली आए हैं काबे में
मुसलसल तीन दिन तक आँख ही खोली न मौला ने
न जब तक आक़ा को देखा अली आए हैं काबे में
विलायत झूम कर कहने लगी मसरूर हो जाओ
हमारे आक़ा और मौला अली आए हैं काबे में
गिरी शैतानियत है मुंह के बल कहती हुई यारो
हमारी जान का ख़तरा, अली आए हैं काबे में
हुआ रौशन ज़माना नूर से मेहरे विलायत के
हुई दुनिया है ताबिन्दा, अली आए हैं काबे में
है फ़त्हे मक्का का दिन, ख़ौफ़ में कुफ़्फ़ार सारे हैं
है लरज़ा लात और उज़्ज़ा, अली आए हैं काबे में

जो पक्का सुन्नी है उसका अक़ीदा है शजर ऐसा
हुए काबे में हैं पैदा, अली आए हैं काबे में

ग़मे हुसैन में रोना कैसा –?

ये अलग बात है के हम अहले सुन्नत की ख़ानक़ाहों में मातम करने ख़ून बहाने का रिवाज नहीं है और न होना चाहिये मगर वाक्याते करबला सुन कर आखों से अश्कों के मोती लुटा कर हमेशा से हम उन मोतियों के ज़रिये जन्नत ख़रीदते चले आए हैं।

ग़में हुसैन में रोना कैसा है, क़ुर्आनों हदीस और उसकी तफ़्सीरो तशरीहात में मुतअददिद् मक़ाम पर आया, आम मोमिन की मौत का ग़म उसके चाहने वाले ज़िन्दगी भर नहीं भुला पाते तो ये उम्मत अपने नबी के नवासे की मज़लूमाना शहादत कैसे भुला दे नबी के घर वालो का ग़म 3 दिन का नहीं होता वरना रसूल अल्लाह अपने चचा हज़रते अबु तालिब के विसाल के पूरे साल को आम्मुल हुज़्न (ग़म का साल) न करार देते अल्लाह ताला क़ुर्आने पाक में इरशाद फ़रमाता है।

فما بكت عليهم السماء والارض

और ज़मीनो आसमान उन पर रो पढ़े (अद्दुख़ान आयत नम्बर 29)

हज़रते इमाम सुयूती रह० तफ़सीरे दुर्रे मन्सूर में इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं: قال: واخرج ابن ابی الدنیا:

الا على اثنين (الى ان قال) وتدرى ما بكاء السماء؟ قال: تحمر وتصير وردة كالدهان، ان يحيى بن زكريا لما قتل احمرت السما وقطرت دما وان حسين بن علي (عليه السلام) يوم قتل احمرت السماء.

इब्ने अबिददुनया फ़रमाते हैं आसमान सिर्फ़ दो मरतबा रोया फिर फरमाया क्या तुम जानते हो आस्मान का रोना क्या है?

उसका लाल हो जाना गुलाबी रंग की तरह - जब यहया बिन ज़करया कत्ल किये गये आसमान लाल हो गया और जब हुसैन बिन अली क़त्ल किये गये तो भी आसमान लाल हो गया था, तफसीरे कश्फ़ व बयान में इमाम सअलबी इस आयत की तफ़्सीर यूँ करते हैं-

وقال السدى : لما قتل الحسين بن على بكت عليه السماء، وبكا وها حمرتها.

وقال: حدثنا خالد بن خداش، عن حماد بن زيد، عن هشام، عن محمد بن سيرين، قال: اخبرونا انّ الحمرة الّتى مع الشفق لم تكن، حتّى قتل الحسين. وقال:اخبرناابن ابى بكر الخوارزمى، حدثنا ابو العياض الدعولى، حدثناابوبكر بن ابى خيثمة، وبه عن ابى خيثمة، حدّثنا ابو سلمة، حدثنا حماد بن سلمة، اخبرنا سليم القاضى، قال: مطرنا دمًا ايام قتل الحسين. الكشف والبيان١٢ /١٢١.

सदी कहते हैं जब हुसैन बिन अली कत्ल हुए तो उन पर आसमान ऐसा रोया के लाल हो गया, और फरमाया हमने ख़ालिद बिन ख़दाश से हम्माद बिन ज़ैद से उन्होंने हेशाम से उन्होंने मोहम्मद बिन सिरीन से सुना के आसमान शफ़क़ के साथ लाल कभी न हुआ था जैसा हुसैन के क़त्ल पर हुआ, और फरमाया हमें इब्ने अबु बकर ख़वारज़मी ने उन्हें अबुल अयाज़ अद दओली ने उन्हें अबु बक्र बिन अबी ख़ेसमा उनसे अबी ख़ैसमा के बेटे ने उनसे अबु सलमा ने उनसे सलीम क़ाज़ी ने ये

रिवायत बयान की के इमामे हुसैन के कत्ल के दिनों में हम पर ख़ून की बारिश हुई।

حدثنى محمدبن اسمعيل ،قال:ثناعبدالرحمن بن ابى حماد،عن الحكم بن ظهير، عن السدى قال: لما قتل الحسين بن على رضوان الله عليهما بكت السماء عليه وبكاوها حمرتها تفسير الطبرى ٢٢/٣٣

मोहम्मद बिन इसमाईल रिवायत करते हैं कि उन्होंने अब्दुल रहमान बिन अबि हम्माद से सुना और उन्होंने हकम बिन ज़हीर से और उन्होंने सदी से के जब हुसैन बिन अली रज़ि० क़त्ल किये गये तो आसमान रो पढ़ा और उसका रोना उसका लाल हो जाना था। तफसीरे तिबरी 22/33 (अल कश्फ़ वल बयान 12/121 इमाम तिबरी तफ़सीरे तिबरी में फ़रमाते हैं)

मुफ़स्सिर मावरदी शाफ़ई अपनी तफ़्सीर नुकत वल उयून में फ़रमाते हैं रोने की तीन वुजूहात में से एक उसका चारो सम्त से लाल हो जाना लिखते है जैसा के उन्होंने मौला अली और अता से सुना -

وحكى جرير عن يزيد بن ابى زياد قال: لما قتل الحسين بن على رضى الله عنهما احمرت له آفاق السماء اربعة اشهر، واحمراوهابكا وها النكت والعيون ٤/١٠٠.

जरीर ने यज़ीद इब्ने अबी ज़ियाद से रिवायत की के जब इमाम हुसैन बिन अली रज़ि० क़त्ल किये गये तो उनके लिये आसमान की बुलन्दियों को चार महीने तक लाल कर दिया गया और उसका लाल हो जाने का मतलब ग़में हुसैन में रोना था। अन्नुक्त वल उयून 4/100

तफसीरे बग़वी में है

لمّاقتل الحسين بن على رضى الله عنه بكت عليه السماء. (بغوى ٧/٢٣٢)

जब इमाम हुसैन क़त्ल हुए तो आसमान उन पर रो पड़ा। बग़वी 7/232

तफ़सीरे सिराजुम्मुनीर में भी यही तफ़सीर है।

इसके अलावा इमाम क़ुरतबी ओर इमाम सुयूती ने भी इस आयत की तफ़सीर में यही लिखा।

ما بـكت السماء على احد إلاّ على يحيى بن زكريا ، والحسين بن علي. (تفسير قرطبی ۱۹۱/۱۰)

आसमान नहीं रोया किसी एक पर लेकिन यहया बिन ज़करया पर और हुसैन इब्ने अली पर, ग़र्ज़ के मुफ़स्सेरीने अहले सुन्नत की अक्सर तफ़ासीर में हुसैन के ग़म में ज़मीनों आसमान के रोने का तज़किरा है मगर आप सोंच रहे होंगे के आसमान रोया तो हम क्यूं रोंए? अगर आपके सीने में रसूल अल्लाह की सच्ची मोहब्बत है और आप खुद को सुन्नी कहते हो तो आपको रोना ही पड़ेगा क्योंकी आप तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के आशिक़ हो रसूल जैसे चले वैसे चलना सुन्नत जैसे खाया वैसे खाना सुन्नत अमामा बांधना सुन्नत मिस्वाक करना सुन्नत ये सारी बाते हमें बचपन से याद कराई जाती मगर अफ़सोस हम सुन्नियों को ये नहीं याद दिलाया जाता के ग़मे हुसैन में आंसू बहाना भी मेरे रसूल की सुन्नत है, कुछ हदीसों का मुताला करें और ख़ारजियत से खुद की हिफ़ाज़त करें।

इमामे अहले सुन्नत इमाम हम्बल रज़ि० अपनी मुसनद की दूसरी जिल्द के सफ़ा न० 85 पर लिखते हैं-

عن عبـد الـلّه بن نجا.عن ابيه: انه سارمع على رضى اللّه عنه، فلـمّا حاذى نينوىٰ وهو منطلق الىٰ صفّين. نادىٰ صبراً ابا عبد اللّه صبراً ابا عبدا للّه" بشطّ الفراط" قال: قلت وماذاک قال

دخلت علىٰ رسول اللّه صلى اللّة عليه وسلم ذات يوم وعيناه تـفيـضان ؟ قلت: يا نبى اللّه ما شان عيـنيک تفيضان؟ قال من عـندى جبريل قبل فـحدثنى ان ولدى الحسين يقتل بشـط الـفـرات، قال: فقال هل لک الىٰ ان اشمک من تربته؟قال: قـلـتُ نـعـم فـمـدّ يـده فـقبض قبضة من تراب فاعطا نيها فلم املک عينى إن فا ضتا"

हज़रते अब्दुल्लाह बिन नजा अपने वालिद से रिवायत करते हैं के वो मौला अली के साथ थे जब नैनवा (करबला) आया (जो सिफ़्फ़ीन से निकलते वक्त पड़ता था) तो मौला अली पुकार उठे सब्र अय अब्दुल्लाह के वालिद ठहरो अय अब्दुल्लाह के वालिद फ़ुरात के किनारे पर- फ़रमाते हैं तो मैने कहा क्या हुआ आपको? मौला अली ने फ़रमाया एक मरतबा मैं रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुजरे में दाख़िल हुआ तो देखा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो रहे थे मैने पूंछा अय अल्लाह के नबी आपकी आखें क्यूं अश्कबार हैं? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के मेरे पास जिबरील आए ओर उन्होंने मुझे बताया के आपका बेटा हुसैन फ़ुरात के किनारे क़त्ल किया जाएगा फिर मौला अली फ़रमाते हैं के रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या उस मिट्टी की बू सूंघना है मैने कहा हां। तो रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ बढ़ा कर एक मुठ्ठी करबला की मिट्टी मेरे हाथ में थमा दी तो मैं अपनी आंखों को बरसने से रोक न सका।

सवाएके मोहर्रका की तीसरी फ़स्ल के ग्यारहवे बाब में इमाम इब्ने हजर हज़रत शअबी के हवाले से लिखते हैं के आपने फरमाया। हम अली के साथ करबला से गुज़रे जो सिफ़्फ़ीन के रास्ते में था, और नैनवा पहूंचे तो मौला अली रूके और उस ज़मीन का नाम पूंछा? तो उन्हें उस ज़मीन का नाम करबला बताया गया, ये नाम सुन कर मौला अली इतना रोए इतना रोए के वो ज़मीन उनके आँसुओ से तर हो गई फिर मौला अली फ़रमाने लगे के एक मरतबा मैं रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुजरे मुबारक में दाखिल हुआ तो देखा के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो रहें है मैने पूछा मेरे मां बाप आप पर कुर्बान या रसूल अल्लाह क्या शै है जो आपको रूला रही है तो फ़ख़रे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के मेरे पास अभी अभी जिबरील आए थे और उन्होंने मुझे ख़बर दी के अपका बेटा हुसैन नहरे फुरात के किनारे कत्ल किया जाएगा एक ऐसी जगह जिसे करबला कहा जाता है।

इमाम मावरदी शाफ़ई अपनी किताब आलामुन्नबुव्वत के बाब इन्ज़ारून्नबी में तहरीर फरमाते हैं-

عن عُروةَ عن عائشه قالت:دخل الحسین بن علی علٰی رسول اللّٰہ وھو یوحی الیه فقال جبرائیل: اِن اُمتک ستفتتن بعلک وتقتل ابنک ھذا مِن بعدک، ومدّ یدہٗ فاَتاہ بتربة بیضاء وقال : فی ھٰذہِ یقتلُ ابنک، اسمھا الطّف، قال: فلما ذھب جبرائیل، خرج رسول اللّٰہؐ الیٰ اصحابه وتربة بیدہ. وفیھم: ابو بکر و عمر وعلی و حذیفه و عثمان وابوذر

وھو یبکی فقالوا: ما یبکیک یا رسول اللّٰہ ؟ فقال : اخبرنی جبرائیل : ان ابنی الحسین یقتل بعدی باَرضِ الطف و جاءنی بھذہ التربه فاَخبرنی انَ فیھا مضجعه.

हज़रते उरवा उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ि० से रिवायत करते हैं के हुसैन बिन अली हुजरए रसूल में इस हाल में दाख़िल हुए के उन पर वही नाज़िल हो रही थी तो जिबरील ने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी के आपकी उम्मत आपकी ज़ाहिरी हयात के बाद फ़ितना करेगी और आपके इस बेटे हुसैन को क़त्ल कर देगी, फिर जिबरील ने हाथ बढ़ा कर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सफ़ेद मिट्टी दी और कहने लगे ये उसी जगह की मिट्टी है जहाँ आपका बेटा क़त्ल किया जाएगा इसका नाम तुफ़ है, हज़रते उरवा रिवायत करते हैं के हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस मिट्टी को हाथ में लिये हुए रोते रोते सहाबा के पास पहुँच गये और उस वक़्त हज़रते अबु बक्र, हज़रत उमर, हज़रते अली, हज़रते हुज़ैफ़ा, हज़रते उसमान, और हज़रते अबूज़र वहाँ पर मौजूद थे तो तमाम सहाबा ने पूछा आपको क्या चीज़ रूला रही या रसूल अल्लाह ? तो फरमाया के मुझे जिबरील ने ख़बर दी के आपका बेटा आपके बाद तुफ़ की ज़मीन पर क़त्ल कर दिया जाएगा जिबरील साथ में वो मिट्टी भी लाऐ थे जो मेरे बेटे की क़त्लगाह होगी।

मिरक़ातुल मसाबीह शरह मिशकातुल मसाबीह के किताबुल मनाक़िब के मनाकिबे अहले बैत में तिरमिज़ी शरीफ़ की इस रिवायत को भी पढ़िये।

وعن سلمٰی قالت: دخلت علٰی ام سلمة وهی تبکی، فقلت! ما يبکيک؟ قالت راء يت رسول اللّٰه صلی علیه وسلم تعنی فی المنام. وعلٰی راسه ولحيته التراب فقلت مالک يارسول اللّٰه صلی علیه وسلم؟ قال شهدت قتل الحسين آنفاً.

हज़रते सलमा रज़ि० से रिवायत है के एक मरतबा वो हज़रे उम्मे सला रज़ि० के हुजरे में इस हाल में दाख़िल हुई के हज़रते उम्मे सलमा रज़ि० रो रहीं थीं, तो उन्होंने कहा आपकी आखें अश्कबार क्यूं हैं ? उम्मे सलमा रोते रोते कहने लगी के मैंने अभी रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा इस हाल में के उनका सर और दाढ़ी मुबारक गर्द आलूद थी तो मैंने पूछा या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपको क्या हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के मैं अभी अभी क़त्ले हुसैन देख कर आ रहां हूँ।

तिरमिज़ी 5/614/615

हज़रते अबु बक़र बिन अबी शैबा और इमाम अहमद बिन हम्बल और अहमद बिन मुनीअ और अब्द बिन हुमैद सही सनद के साथ इस हदीस को लिखते हैं।

وعن عمار بن ابی عمار، عن ابن عباس رضی اللّٰه عنه قال رايت النبیؐ فيما يری النائم بنصف النحار وهوقائم اشعث اغبر بيده قارورة فيها دم فقلت: بابی انت وامی يا رسول اللّٰه ما هذا؟ قال هذا دم الحسين واصحابه لم ازل التقطه منذ اليوم، قال: فا حصيناذلک اليوم فوجدنا قتل فی ذالک اليوم.

हज़रते अम्मार बिन अबी अम्मार से रिवायत है के हज़रते इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया के एक रोज़ दोपहर के वक़्त मैंने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा के वो इस हाल में खड़े थे के बाल बिखरे हुऐ थे और गर्द आलूद थे, आपके हाथ में ख़ून की एक बोतल थी – हज़रते इब्ने अब्बास ने पूछा या रसूल अल्लाह आप पर मेरे मां बाप कुर्बान ये सब क्या है ? तो आपने फ़रमाया ये हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है जो मैं सुबह से इखट्ठा कर रहा हूँ। हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाया फिर मैने उस वक़्त को याद किया तो ये वही आशूरा का दिन था जिस दिन इमामे हुसैन शहीद हुए थे।

मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल जिल्द 1 सफ़ा 242 हदीस न० 2165, मीर सफ़ा 283 हदीस न० 2553, फ़ज़ायले सहाबा जिल्द 2 सफ़ा 779 हदीस न० 1381, तिबरानी अलकबीर जिल्द 3 सफ़ा 110 हदीस न० 2822, इमाम हाकिम जिल्द 4 सफ़ा न० 397/398 हदीस न० 8201 इमाम बैहकी ने दलायलुन्नबुव्वा की जिल्द 6 सफ़ा 471 पर, इब्ने असाकिर ने तारीख़े दमिश्क़ की जिल्द 14 के सफ़ाह 228 पर, हम्माद बिन सलमा से उन्होंने अम्मार इब्ने अबी अम्मार से उन्होंने इब्ने अब्बास की सनद से रिवायत किया है, इस हदीस को इमाम हाकिम और ज़हबी ने सही मुस्लिम की शर्त पर सही क़रार दिया।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अल बिदाया वन्नेहाया की 8 वी जिल्द के सफ़ा 202 पर इसकी सनद क़वी लिखी है।

حدثنا عبد اللّٰه ثنا ابراهيم بن الحجاج ثنا حماد بن سلمه عن عمار عن ميمونة قالت: سمِعتُ الجن تنوح علٰی الحسين

حدثنا محمد بن عثمان بن ابی شیبه ثنا جندل بن والق ثنا عبد اللّٰه بن الطفیل عن ابی زید الفقیمی عن ابی جناب الکلبی حدثنی الجصاصون قالو کنااذافرجنا بالیل الی الجبانة عند مقتل الحسینؓ سمعنا الجن ینوحون علیه ویقولون. مسح الرسول جبینه فله بریق فی الخدود ابواه من علیا قریش جده خیرالجدود.(مجمع الزوائد ۹/۱۹۹)

अब्दुल्लाह ने इब्राहीम बिन हज्जाज से उन्होंने हम्माद बिन सलमा से उन्होंने अम्मार से उन्होंने मैमूना से ये हदीस बयान की के वो फ़रमाती हैं के मैने क़ौमे अजिन्ना को हुसैन पर रोते हुए सुना मोहम्मद बिन उसमान बिन अबी शीबा ने जन्दल बिन वालिक़ से उन्होंने अब्दुल्लाह बिन तुफ़ैल से उन्होंने अबी ज़ैद फ़क़ीमी से उन्होंने अबी जनाब कल्बी से उन्होंने जसासून से ये रिवायत बयान की के हम लोग जब मक़्तले हुसैन में रात के वक़्त गये तो हमने सुना के जिन्नात उन पर रो रहे थे और रोते रोते कह रहे थे यह वह हुसैन हैं जिनकी पेशानी का रसूल बोसा लिया करते थे हुसैन ही के लिये आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लुआबे दहन है, इनके बाबा अलीयुल मुर्तज़ा हैं, और नाना हर नाना से बेहतर।

وَعَن اُمّ سَلَمَة، قَالَت: سمِعت الجن تنوح عَلی الحسین بن عَلی رواه الطبرانی، ورجاله رجال الصحیح.

हज़रते उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं के मैने जिन्नातो को हुसैन पर रोते हुए सुना (रवाह तिबरानी अस्माउर्रेजाल में ये हदीस सही है)

حدثنا ابراهیم بن عبد اللّٰه ، نا حجاج، نا حماد، عن ابان، عن شهر بن هوشب، عن ام سلمة، قالت: "کان جبرئیل علیه

السلام عند النبی ﷺ والحسین معی فبکی، فترکته فدنا من النبی ﷺ فقال جبرئیل : اتحبه یا محمد؟ فقال: نعم، فقال(۲): ان امتک ستقتله. رواه الطبرانی فی الکبیر(۳: ۱۱۴، ۱۱۵)

इबराहीम बिन अब्दुल्लाह हज्जाज से वो हम्माद से वो अबान से वो शहर बिन होशब से और वो उम्मे सलमा रज़ि० से हदीस बयान करते हैं के हज़रते उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं के जिबरील अलैहिस सलाम रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थे हुसैन मेरे साथ थे, रसूल अल्लाह रोने लगे तो मैने हुसैन को छोड़ा और रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहूँची, जिबरील ने उनसे पूछा अय मोहम्मद क्या आप इस हुसैन से मोहब्बत करते हैं? तो आक़ा ने फ़रमाया हां तो जिबरील बोले आपकी उम्मत अनक़रीब आपके हुसैन को क़त्ल कर देगी। इस हदीस को इमाम तिबरानी ने कबीर की जिल्द 3 के सफ़ा 114/115 पर 4 तुरूक़ से हज़रते उम्मे सलमा से रिवायत किया है और इसकी सनद हसन है और इसे मजमउज़ ज़वायद की नवीं जिल्द के सफ़ा 189 पर भी तहरीर किया गया है, चूँकि ये रिसाला मुख़्तसर है इसलिये तमाम हदीसों को यहां शमिल नहीं किया जा सकता इसलिये इससे मिलती जुलती हदीसों के हवालेजात अपने ज़ेहन में महफ़ूज़ करलें ताके कोई ख़ारजी फ़िक्र का मालिक ग़में हुसैन में निकलने वाले आसुओं को रोकता दिखाई दे तो उसे अल्लाह के नबी की आहो ज़ारी, सहाबाये किराम और अहले बैत का ग़में हुसैन में रोना

आप दिखा सकें और अपनी आख़िरत बचा सकें।

रवाह बुख़ारी जिल्द 8 सफ़ाह 9/183/996, हदीस न० 996/1198/4570/4572, तिबरानी जिल्द 3 सफ़ा 135 (12196) मोअत्ता इमाम मालिक जिल्द 1 सफ़ा 121/122, रवाह मुस्लिम (863) 182 अबू दाऊद (1367) (5091) इब्ने माजा (1363)-3884-3427, तिरमिज़ी फ़िश्शमायल (262)-(3566), निसाई (3/210-211) (8/268-285), इबने ख़जीमा (1685) ,अबू अवाना 1/315-316, तहावी 1/288, इब्ने हबान 1/315/316, बैहकी 3/8-6/471, अन्ज़र (1912), इमाम अहमद- 6/301-315-294-305-318-322-321-(1/242), इब्ने माजा -925, हमीदी 299, मिशकातुल मसाबीह (6/471), इब्ने असाकिर 14/227

ग़में हुसैन में रोने का फ़ायदा

अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया। فليضحكو اقليلا و ليبكوا كثيرا हसने में कमी करो और आहो ज़ारी की कसरत करो।

इसकी तफ़सीर मुफ़स्सेरीन ने इस तरह की है कि अल्लाह के ख़ौफ़ से आंसू बहाओ क्यूंकि दुनिया की उम्र बहुत कम है एक दिन ख़त्म हो जाएगी इसी से मिलती जुलती और भी आयात और अहादीस हैं जिनमें कम हँसने और ज़्यादा आहो ज़ारी करने का हुक्म है, यानी रोने में किसी किस्म की कोई क़बाहत नहीं है चाहे वह ख़ुदा के ख़ौफ़ में रोया जाए या इश्के रसूल में रोया जाए या फिर ग़में हुसैन में रोया जाए या अपने शेख़ की मोहब्बत में रोया जाए हुसैन के ग़म में रोने वालों के लिये इमामे

हुसैन ने जो नेअमत बताई है उसको पढ़ कर आशिक़ाने हुसैन झूम उठेंगे।

عن الربيع بن منذر، عن ابيه قال: كان حسين بن على (ر) يقول: من دمعت عيناه فينا دمعة، او قطرت عيناه فينا قطرة، اتاه الله عز وجل الجنة، اخرجه احمد فى المنا قب.

फ़ज़ाएले सहाबा जिल्द 3 सफ़ह 132 (ज़ख़ाएरूल उक़बा सफ़ह 19)

हज़रते रबी बिन मुनज़र अपने वालिद से रवायत बयान करते हैं कि इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिसने मेरे ग़म का एक आंसू भी बहा दिया अल्लाह तआला उसे जन्नत अता करेगा।

मांगो दुआ हुसैन से ख़ाली न जाएगी
बात उनकी ख़ुद ख़ुदा से भी टाली न जाएगी
इश्के ग़में हुसैन के आंसू बहा के देख
इतनी ख़ुशी मिलेगी सम्भाली न जाएगी

क्या आप जानते हैं हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार ज़िंदाशाह मदार रज़िअल्लाहु अन्हों कौन हैं?

१-आप तबे ताबईन हैं (जिसने ताबईन का ज़माना पाया हो और ताबईन वो जिन्होंने सहाबा का जमाना पाया हो और इन सबको देखा हो

२-हिन्दोस्ताँ के पहले सूफी मुबल्लिगे इस्लाम हैं जो २८२ हि. (सरकार गरीब नवाज़ से approximately ३०० साल पहले) हिज़री मे हिन्दोस्तान आये।

३-आप ऐसे आले रसूल हैं के आपका नसब सिर्फ १० वास्तों के बाद मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल जाता है।

४-आपको निस्बते उवैसिया हासिल थी जिसकी वजह से हिन्दोस्ताँ की हर ख़ानकाह ने आपसे इजाजतों खिलाफत हासिल करके आपकी निस्बत हासिल की।

५-आपका सिलसिला सिर्फ ४ वास्तों के बाद सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है और आपका सिलसिला ५ या ६ वास्तों से सरकारे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है।

६-आपने ५५६ साल का रोज़ा रक्खा यानि आप मकामे समदियत (बेनियाजी का मकाम)पर फाएज़ थे।

आपने गौसे आज़म रज़िअल्लाहुन्हों) २०० साल पहले बगदाद

मे दीं की तब्लीग की और नहरे दजला ऑफि की करामात की वजह से आज तक नहीं सुखी।

८- आपने ग़ौसे आज़म सरकार के जलाल को जमाल मे बदला और उनकी बहन बीबी नसीबा को आप ही की दुआ से २ औलादें मिली जो आज सय्यद मोहम्मद जमालउद्दीन और सय्यद अहमद के नाम से जातिनगर हिलसा बिहार और आजमगढ़ मे मरजए खलाक हैं

९-आपके चेहरे पर ७ नकाब पड़े रहते थे अगर एक भी नकाब उठ जाता था तो मखलूके खुदा बेखुदी के आलम मे सजदा रेज़ हो जाया करती थी और कलमा पढ़ लेती थी।

१०-आप ठोकर से मुर्दे जिंदा कर देते थे।

११-आप के एक लाख से ज़्यादा खलीफा पूरी दुनियाँ में मौजूद हैं।

१२-आप ने पूरी दुनियाँ के तकरीबन हर मुल्क का दौरा करके लोगों को शरीयत और इस्लाम की तालीम दी।

१३- हिन्दोस्तान में आपके १४४२ चिल्ले हैं और पूरी दुनियाँ में हजारों चिल्ले हैं, इराक में इमामे आज़म अबू हनीफ़ा की मज़ार के सामने भी आपका चिल्ला मुंतदाओ अहमदुलाहलबी के नाम से है।

१४- आपके नाम से आज भी जमादिउल अव्वल का महीना मदार के महीने के नाम से मशहूर है।

१५-आप इमामे आजम अबू हनीफा रज़िअल्लाहु अन्हो के

मसलक के सबसे बड़े मुबल्लिग हुए, आप ही की वजह से पूरी दुनियां में हनफियत परवान चढ़ी ।

१६- आज भी आप की खानकाह में जिंदा करामातों का जहूर होता है।

१७- आपके उर्स में दारा शिकोह के जमाने में ५ लाख का मजमा हुआ करता था और आप ही की दुआ से साहू सालार मसूद गाजी (र.अ.) ने सय्यद सालार मसूद गाजी को पाया।

तसनीफ़ो तालीफ़े ख़ानवादए वक़ारिया मदारियह

सूफ़ियाए इस्लाम व जदीद साइन्स
मदारूल आलमीन का शरई जवाज़ / अहले ख़िदमात बातिनया
(अबुल अज़हर अल्लामा सैयद मंज़र अली मदारी)
तारीख़े मदारे आलम (उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुजराती, बंगाली)
मदार का चाँद / मीम से मीम तक / ताहा / (इकरा-मजमूए कलाम)
(क़ारी अल्हाज सैयद महज़र अली मदारी)
सैय्यदुस्सादात कुतबुलमदार रजि० / आफताबे विलायत
मदारे शरिअत / (मदारे निजात-मजमूए कलाम) / फ़िक़ीह मसाईल
(मुफ़्ती सैयद शजर अली मदारी)
सायका बरख़िरमने मुफ्तीयाने रिज़विया / सैफे मदार
(अल्लामा सैयद ज़ुलफिक़ार अली मदारी रह.)
ज़ुलफिक़ारे बदीई / मामूलात अबुल वक़ार
(कुत्बे आलम अबुल वक़ार सैयद कल्बे अली मदारी रह.)
फज़ाएले अहलेबैत अतहार व इरफान कुत्बुल मदार
(अल्लामा सैयद मुख़्तार अली दिवान दरगाह आस्ताना मदारे आज़म)
अर्बी से उर्दू तर्जुमा अलक़्वाकेबुद दरारिया फ़िमनाक़िबे तनवीरे मदारियह
मुर्शिदे कामिल / मोईने आमिल
(मौलाना मोहम्मद बाक़र जायसी वक़ारी मदारी)
आलमी शजरए मदारियह
(हज़रत मेंहदी हसन वक़ारी मदारी) बेती रायबरेली

Mobile : 7860105441, 9918966866, 9935586434
Website : www.madareazam.com • Email : syedshajarmadari@gmail.com

नाशिर- जामिया महज़र-उल-उलूम वक़ारिया मदारियह
एस.एम.हास्पिटल मैटरनिटी एण्ड ट्रामा सेन्टर, मकनपुर

Al-Madar Offset Kanpur (M) 09616584408